Post updated - Reliability of Test and its determinants.

(B.A 3rd Psychology Hons. Paper-VIII)

Prepared By

Dr. Gurdeep Kaur Athwal

Asst. Prof.

Dept. of Psychology

B.N. College, T.M.B.U Bhagalpur.

Email: gurdeepathwal18@gmail.com

REDMI NOTE 8
48MP QUAD CAMERA

परीक्षण की विश्वसनीयता से आप क्या समझते हैं? इसका निर्धारण कैसे किया जाता है?

विश्वसनीयता किसी भी परीक्षण प्राप्तांक का एक प्रमुख गुण होता है। सरल अर्थ में विश्वसनीयता से तात्पर्य प्राप्तांकों की परिशुद्धता से होता है। वैज्ञानिक अर्थ में विश्वसनीयता से तात्पर्य प्राप्तांक की संगति से होता है जो उनके पुनरुत्पादकता के रूप में दिखलाई देती है। कोई भी परीक्षण जब वर्तमान समय तथा कुछ दिन बीतने के बाद संगत परिणाम देता है, तो यह कहा जाता है कि उसके प्राप्तांकों में संगति है। ऐसी संगति को कालिक संगति कहा जाता है। कोई परीक्षण को उस परिस्थिति में भी संगत परिणाम देते हुए माना जाता है जब परीक्षण के एकांशों के कुछ सेट पर आने वाले प्राप्तांक करीब-करीब उन प्राप्तांकों के तुल्य होते हैं जो परीक्षण के बाकी एकांशों के सेट पर मिले हैं। प्रायः इस तरह की संगति जात करने के लिए परीक्षण को किसी प्रतिदर्श पर एक बार क्रियान्वयन कराना होता है। एकांशों की ऐसी संगति को आंतरिक संगति कहा जाता है। परीक्षण प्राप्तांक की विश्वसनीयता से तात्पर्य इनदोनों तरह की संगति अर्थात कालिक संगति तथा आन्तरिक संगति से होता है। स्पष्टतः तब यह विश्वसनीयता से तात्पर्य परीक्षण प्राप्तांकों में संगति से होता है। मार्शल एवं हेल्स - 1972 ने परीक्षण की विश्वसनीयता को इसी आलोक में परिभाषित करते हुए कहा है, "परीक्षण प्राप्तांकों के बीच संगति की मात्रा को ही विश्वसनीयता कहा जाता है।"

इस प्रकार परीक्षण की विश्वसनीयता के दो पहलू हैं :- कालिक संगति या कालिक स्थिरता तथा आन्तरिक संगति। इनदोनों संगति का मापन सहसंबंध गुणांक जात करके किया जाता है। जिस सहसंबंध से गुणांक से परीक्षण की आंतरिक संगति का पता चलता है कि, उसे आंतरिक संगति गुणांक या अल्फा गुणांक भी कहा जाता है। स्पष्ट हुआ कि परीक्षण के प्राप्तांकों की विश्वसनीयता जात करने के लिए उस परीक्षण के प्राप्तांकों का दो सेट होता है जिनके बीच सहसंबंध जात किया जाता है। शायद यही कारण है कि परीक्षण की विश्वसनीयता को परिभाषित करते हुए यह भी कहा जाता है कि विश्वसनीयता परीक्षण का आत्मसहसंबंध होता है।

विश्वसनीयता आकलन की विधियाँ

Method of Estimating Reliability

किसी भी परीक्षण प्राप्तांक की विश्वसनीयता के आकलन के कई विधियों की चर्चा की गई है। इन विधियों में निम्नांकित चार विधि अधिक लोकप्रिय हैं जिनके द्वारा विश्वसनीयता के चार प्रकार का पता

REDMI NOTE 8 48MP QUAD CAMERA

विश्वसनीयता भी कहा जाता है। गुलकिंसन-1950 के अनुसार जब किसी परीक्षण के दोनों फार्म जैसे फार्म A तथा फार्म B का समान माध्य, समान प्रसरण तथा समान अन्तर-एकांश सहसंबंध होता है तो इन दोनों फार्मों को तुल्य या समान्तर माना जाता है। फ्रीमैन 1962 का मत है कि किसी परीक्षण के दोनों फार्म को तुल्य कहलाने के लिए इन तीनों शर्तों के अलावा दोनों फार्म का अंकन विधि एवं क्रियान्वयन का भी समान होना चाहिए। अगर दोनों फार्म सही अर्थ में तुल्य होते हैं तो दोनों में से किसी भी फार्म का क्रियान्वयन करने का परिणाम एक ही आएगा।

5. प्राप्तांक-लेखक विश्वसनीयता :-

कुछ मनोवैज्ञानिक परीक्षण जैसे सर्जनात्मक परीक्षण तथा प्रक्षेपी परीक्षण का स्वरूप ऐसा होता है जिसमें एकांशों के प्रति दिये गए उत्तरों का प्राप्तांक-लेखन पद्धत कुछ प्राप्तांक लेखक विश्वसनीयता की जरूरत पड़ती है। जो दो परीक्षकों द्वारा स्वतंत्र रूप से परीक्षण प्रोटोकॉल का प्राप्तांक लेखन किया जाता है और फिर उन दोनों के बीच सहसंबंध ज्ञात किया जाता है, तो उससे प्राप्त होने वाला गुणांक को प्राप्तांक-लेखक विश्वसनीयता गुणांक तथा इस प्रकार को प्राप्तांक लेखक विश्वसनीयता कहा जाता है इस तरह के विश्वसनीयता में त्रुटि का स्रोत अन्तर प्राप्तांक लेखक विभिन्नता होता है।

परीक्षण की विश्वसनीयता ज्ञात करने की कई विधियाँ हैं चाहे जिस विधि से विश्वसनीयता गुणांक क्यों न ज्ञात किया गया हो, जहाँ तक उसकी व्याख्या का सवाल है, उसे विभिन्न स्रोतों में उत्पन्न त्रुटि प्रसरण के प्रतिशत के रूप में कर सकते हैं जैसे, विश्वसनीयता गुणांक अगर .95 है, तो इसका मतलब यह हुआ कि परीक्षण प्राप्तांक का 95 प्रतिशत प्रसरण मापे गए शीलगुणों के वास्तविक प्रसरण पर आधारित है बाकी 5 प्रतिशत प्रसरण त्रुटि प्रसरण पर आधारित है। जब प्राप्त विश्वसनीयता गुणांक का वर्गमूल ज्ञात किया जाता है तो उसे विश्वसनीयता का सूचक कहा जाता है जो यह परीक्षण पर के प्राप्तांक तथा वास्तविक प्राप्तांक के बीच अधिकतम सहसंबंध को बतलाता है।

चलता है।

a. परीक्षण - पुर्नपरीक्षण विधि :- Test retest method.

b. आन्तरिक संगति विधि Internal Consistency method.

c. समानान्तर फार्म विधि Parallel form method

d. प्राप्तांक लेखक विश्वसनीयता Scorer reliability.

a. परीक्षण - पुर्नपरीक्षण विधि :- उस परीक्षण को एक ही प्रतिदर्श पर दो बार प्रायः 14 दिन के अन्तराल पर क्रियान्वयन किया जाता है। इस तरह से एक ही परीक्षण प्राप्तांकों के दो सेट प्राप्त हो जाते हैं। बाद में प्राप्तांकों के इन दोनों वितरणों या सेट में सहसंबंध ज्ञात किया जाता है। यही परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक कहलाता है। और इसे तकनीकि अर्थ में कालिक स्थिरता गुणांक कहा जाता है जिससे मूलतः यह पता चलता है कि एक दिये हुए अंतराल पर परीक्षण प्राप्तांक कितना स्थिर है या कितना संगत है। यदि कालिक स्थिरता गुणांक अधिक उच्चा जैसे .89, .95 आदि होता है तो स्पष्टतः यह पता चलता है कि परीक्षण प्राप्तांकों में कालिक संगति है। इस विधि में त्रुटि प्रवल का स्रोत समय प्रतिदर्शन होता है।

B. आन्तरिक संगति विधि :- परीक्षण - पुनर्परीक्षण विधि में जैसा की हम जानते हैं, समय अधिक लगता है क्योंकि एक ही परीक्षण दो बार एक विशेष समय अन्तराल पर वही व्यक्तियों पर क्रियान्वयन करना पड़ता है। आन्तरिक संगति विधि में यह दोष दूर हो जाता है। इस विधि द्वारा परीक्षण में एक रूपता का पता चलता है। अगर परीक्षण के सभी एकांशों द्वारा एक ही शीलगुण या क्षमता का मापन होता है, तो ऐसे परीक्षण को एकरूप या समरूप परीक्षण कहा जाता है। और उसकी आन्तरिक संगति अधिक होती है। आन्तरिक संगति विधि द्वारा परीक्षण की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए परीक्षण को प्रतिदर्श पर एक ही बार क्रियान्वयन करना पड़ता है तथा फिर उपयुक्त विधि द्वारा आन्तरिक संगति गुणांक ज्ञात की जाती है।

C. समानान्तर फार्म विश्वसनीयता की विधि :- समानान्तर फार्म विश्वसनीयता की विधि एक ऐसी विधि है जिसका उपयोग किसी परीक्षण की विश्वसनीयता ज्ञात करने में तब की जाती है जब उस परीक्षण को दो तुल्य फार्म या समानान्तर फार्म के रूप में किया जाता है। इस तरह की विश्वसनीयता को समान्तर फार्म विश्वसनीयता के अलावा तुल्य फार्म